आज तक वादविवाद प्रतियोगिता

सातवीं वसंत वैली आज तक वाद-विवाद प्रतियोगिता ३ अगस्त २०१७ को आयोजित की गई। वसंत वैली स्कूल का आज तक वाद विवाद, सालों से सफल रहा है। भाग लेने वाले वक्ताओं एवं निर्णायकों का मानना है कि यह वाद विवाद वक्ता के विभिन्न गुणों को अनेक रूपों में देखकर परखता है।

इस वर्ष, १५ विद्यालयों ने इस वाद विवाद में हिस्सा लिया।

पहले चरण में, विद्यालयों को ४ - ४ टीमों के पूल में बाँटा गया। हर विद्यालय ने तीन ऑक्सफ़ोर्ड फॉर्मेट के वाद विवाद किए, जिसके दौरान एक वक्ता ने पक्ष में और दूसरे ने विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रश्नकर्ता ने विरोधी टीम के वक्ताओं से ज़ोरदार सवाल भी पूछे।

इन अंको के आधार पर, हर पूल से दो टीम अगले चरण की ओर बढ़ी।
दूसरा चरण, टर्न कोट फॉर्मेट पर आधारित था। हर विद्यालय से २ वक्ताओं ने, कुछ मिनटों की तैयारी के पश्चात, विषय के पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किये। सभी वक्ताओं एवं दर्शकों का मानना था कि यह सबसे चुनौतीपूर्ण एवं रोमांचक चरण था।

तीसरे, यानी आखिरी चरण में सबसे अधिक अंक लाने वाले केवल २ विद्यालयों ने भाग लिया। यह चरण पार्लियामेंट्री फॉर्मेट पर आधारित था एवं हर टीम से तीनों वक्ताओं ने विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

यह ३ चरणों की प्रक्रिया वक्ताओं को विभिन्न विचार प्रस्तुत करने का मौका देती है, जिसके द्वारा न केवल उनकी वाक्पटुता बढ़ती है, बल्कि सोचने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

वक्ता खुद के बल पर, बिना किसी सहायता के तैयारी करते हैं, निर्णायकों की विस्तृत प्रतिपुष्टि भी वक्ताओं के लिए बहुमूल्य साबित होती है।
यह, आज तक वाद विवाद प्रतियोगिता में मेरा दूसरा वर्ष है, और मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि मुझे कहीं भी इतना प्रत्यक्ष एवं संतोषप्रद अनुभव नहीं मिला है।

प्रश्न: आज के टर्नकोट वाद-विवाद में आपको सबसे मज़ेदार विषय कौन सा लगा?

श्रीमान प्रभांशु: आज के वाद-विवाद में मुझे 'ईंट का जवाब मुस्कराहट हो सकती हैं।' बहुत दिलचस्प लगा। मुझे लगता है कि इस विषय पर बहुत तर्क प्रस्तुत की जा सकती हैं।

प्रश्न: आपके वाद-विवाद के अनुभव में कौन सा विषय आपका पसंदीदा विषय है?
श्रीमान प्रभांशु: मेरा सबसे मनपसंद विषय था 'हम मनुष्यों का अस्तित्व एक कल्पना कथा है।' इस विषय पर मैंने कोई तैयारी नहीं की थी, पर जब मैं तर्क-वितर्क करने लगा तब मुझे ऐसा लगा कि मेरे अंदर की आवाज़ जग कर वादन करने लगी है।

प्रश्न: आपको अंतिम चरण से क्या उम्मीदें हैं?
श्रीमान प्रभांशु: आज तक वाद-विवाद प्रतियोगिता के अंतिम चरण से मैं उच्च उम्मीदें रखता हूँ। आज तक वाद-विवाद प्रतियोगिता हमेशा ही रोमांचक मोड़ लेती है।

अंतिम चरण का विषय:
मानवाधिकार अपराधियों का हथियार बन गया है।

सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता
१. संस्कृति- दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर के पुरम
२. मानसी तेवाती- हेरिटेज स्कूल
३. यशवर्धन गुप्ता- भटनागर इंटरनेशनल
४. उत्सव सूरी- के आर मंगलम

सर्वश्रेष्ठ वक्ता :
१. उदय बंसल - दिल्ली पब्लिक स्कूल आर के पुरम
२. अनन्य भरद्वाज - हेरिटेज स्कूल
३. श्रव्या वर्मा - ब्लू बेल्स स्कूल
४. प्रह्लाद शंकर वर्मा - दिल्ली पब्लिक स्कूल वसंत कुञ्ज

पहला चरण

श्री राम विद्यालय बनाम वसंत वैली विद्यालय

'सत्यमेव जयते' आधुनिक संदर्भों में एक खोखला नारा है।'

"सचाई की हमेशा जीत ही होती हैं।"

श्री राम विद्यालय के पक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने कहा कि लोगों के भले के लिए सच नहीं बोला जाता हैं। उन्होंने यह भी बोला कि जो लोग खुल कर सच बोलते हैं, उनका फ़ायदा उठाया जाता है। उनके विपक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने कहा कि सच बोलना इंसान के संस्कारो में होता है। उन्होंने यह भी बोला कि सत्य हमारे समाज का एक ज़रुरी भाग है।

वसंत वैली के पक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने यह कहा कि आज के ज़माने में दुनिया धन से ही चलती हैं, और यह ही आज का सत्य है। उन्होंने बोला कि पैसे की इतनी भूख हो गई है कि सब भ्रष्टाचार के वश में हैं उनके विपक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने यह कहा कि "जहाँ असत्य है, वहाँ सत्य की जीत भी हो रही है।" उन्होंने यह भी कहा कि किसान सच्चाई के नैतिक मूल्य पर चलते हैं।

नेवी चिल्ड्रन विद्यालय बनाम ब्लू बेल्स विद्यालय

'आज चिकित्सा क्षेत्र धन कमाने का सर्वोत्तम रास्ता है।'

इस विषय के लिए कुछ रोमांचक तर्क-वितर्क प्रस्तुत किये गए।

" हम जितने आधुनिक होते जा रहे हैं, उतने ही प्रकृति से दूर हो रहे हैं। "

नेवी स्कूल के छात्रों ने कहा कि एक चिकित्सक को भगवान का दर्जा दिया जाता हैं क्योंकि वह जीवन देता है। विपक्ष में उन्होंने कहा कि युवापीढ़ी छोटा एवं सरल राह लेना चाहती है। इस से धन नहीं, केवल आत्म संतुष्टि मिलती है।

ब्लू बेल्स ने पक्ष में कहा कि चिकित्सा शास्त्र ऐसा है कि धन और यश दोनों कमाया जा सकता है। विपक्ष के वक्ता ने कहा कि कई चिकित्सक ऐसे भी हैं, जो दूसरों का इलाज मुफ्त में करते हैं।

हेरिटेज विद्यालय, वसंत कुञ्ज बनाम बिरला विद्या निकेतन

'अब सचमुच अच्छे दिन आ गए हैं।'

"गांधीगिरी आज-कल सिर्फ गुंडागिरी की ओर जा रही हैं।"

हैरिटेज विद्यालय के पक्ष बोलने वाले वक्ता ने कहा कि विमुद्रीकरण से काला धन निकला था। उन्होंने यह भी कहा किभारत के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के कारन वह एक महाशक्ति बनने के मार्ग पर है। उन्होंने कहा कि 'जीएसटी' के कारण व्यापार बढ़ गया है और 'सर्जिकल स्ट्राइक' से भारत ने यह सिद्ध कर दिया है कि हम आतंकवादियों को नहीं सहेंगे। विपक्षी प्रतियगो ने अपने तर्कों सहित यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि अच्छे दिन कतई नहीं आये है| उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान का उदाहरण देकर कहा कि वह वास्तव में काम नहीं कर रहा और इसके माध्यम से गंगा नदी और भी गन्दी हो गयी है।

"विकास बढ़े गा, तभ ही हम बढ़ेंगे।"

बिरला विद्या निकेतन के पक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने यह कहा कि स्वच्छ भारत आंदोलन गांधीजी के स्वपन को पूरा करने का एक माध्यम है। उन्होंने यह भी कहा कि समाज अब एक पहल ले रहा है और पानी की टंकी में रखा हुए स्थिर पानी की जांच करके उसे हठाते है। उनके विपक्ष बोलने वाले प्रतियोगी ने यह कहा कि आज-कल देशों पूर्ण गरीबी में है। उन्होंने यह भी कहा कि कश्मीर में होने वाले लड़ाइयों और साफ पीने के बिना हम कैसे कह सखते है कि आज अच्छे दिन आ गए?

डी.ए.वि. विद्यालय बनाम भटनागर स्कूल

'हिंदी देश के विकास में रूकावट है।'

"ऐसा क्या आ गया नया की भारत वासी अपने ही मातृभाषा भूलने लगे?"

डी.ए.वी. विद्यालय के छात्रों ने कहा कि जो भी देश विकास के मार्ग पर चल रहे हैं, वहाँ की मूल भाषा अँग्रेज़ी है। भटनागर स्कूल का भी यही मानना था।

डी.ए.वी. विद्यालय से इस विषय के विपक्ष में वक्ता ने कहा कि भारतीय अपने संस्कृति को भूल रहे हैं और इसी सोच का विस्तार करते हुए भटनागर स्कूल ने कहा कि यदि प्रधानमंत्री मोदी को विदेश में हिंदी बोलने में शर्म नहीं आती तो हमें भारत में ही हिंदी में वार्तालाप करने में शर्मिंदगी क्यों महसूस होती है?

एपीजे विद्यालय बनाम एमीटी विद्यालय

'अब सचमुच में अच्छे दिन आ गए हैं'

"मोदी जी हमारे देश के फायदे के लिए काम कर रहे हैं"

शुरुआत में पक्ष में कहा गया कि आज कल टीवी पर मोदी जी के खिलाफ भ्रष्टाचार की बातें नहीं सुनी जा रही हैं तथा पिछले तीन सालों में मोदी जी ने बहुत कुछ किया है। मेक इन इंडिया प्रोग्राम और विमुद्रीकरण, काला धन को समाप्त करने की दिशा में मोदी जी द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। जो प्रत्यक्ष प्रमाण देते हैं कि अच्छे दिन आ गए हैं।

विपक्ष में कहा गया था कि हम आए दिन समाचार पत्र में हत्या या अपराध की ख़बरें पढ़ते है। लोग धर्म और रंग के नाम पर हत्या करते है। अंत में उन्होंने कहा कि जब अल्लाह के मस्जिद में राम नज़र आएगा, जब मंदिर में रेहमान नज़र आएगा और जब इंसान को इंसान में इंसान नज़र आएगा तो ही भारत सफल नज़र होता जाएगा।

के आर मंगलम विद्यालय बनाम डी. पी. एस वसंत कुन्ज

'आज की समाज में सहिष्णुता बढ़ी हैं।'

"जो गरजते हैं वो बरसते हैं"

इस विषय के पक्ष में के. आर. मंगलम विद्यालय ने कहा कि भारत में हर धर्म के लोग रहते हैं। सहिष्णुता सच में बढ़ी है क्योंकि हमारे राष्ट्रपति भी एक दलित हैं। जे.एन.यू की भी बात चर्चा हुई थी जहाँ छात्र एंटी नेशनल बात कर रहे थे।विपक्ष में मुस्लिम - हिन्दू अधिकार की बात की गयी व कहा कि धर्म के नाम पर लोग अभी भी लड़ते रहते हैं।

डी. पी. इस वसंत कुंज ने इसी विषय के पक्ष में कहते हुए कहा कि सब तरह के लोग कार्यस्थल में काम करते हैं। संस्कृतियों को भारत के माध्यम से सम्मान दिया जाता गया है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि हाल ही में अमरनाथ में एक मुस्लिम ने एक हिन्दू को गिरने से बचाया था ! इसी विषय के विपक्ष में कहा गया कि सहिष्णुता लोकतंत्र के लिए एक खतरा है। छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई होती है। भारत के लोगों के बीच बुनियादी एकता की आवश्यकता है।

साधु वासवानी इंटरनेशनल स्कूल बनाम आर्मी पब्लिक स्कूल

'आज चिकित्सा क्षेत्र धन कमाने का सर्वोत्तम रास्ता है'

वक्ता साधु वासवानी इंटरनेशनल स्कूल से थी। उन्होंने कहा कि आज कल चिकित्सक बहुत महंगे इलाज करते है। इलाज की महंगाई बढ़ती जा रही है और उचित स्तर के इलाज का खर्चा सिर्फ अमीर लोग उठा सकते हैं ।
विपक्ष में बोलने वाले वक्ता ने तर्क यह दिए कि चिकित्सकों को भगवान का दर्जा दिया जाता है। चिकित्सक हमे जानलेवा बीमारियों से बचाते हैं व हमारा इलाज करते हैं। हमारी जान बचाने के लिए वह बहुत काम करते हैं और तो और, हम उन्हें पैसे देते हैं। वे हमारी मदद करते हैं, जान बचाते है, पैसे कामना उनका मुख्य उद्देश्य नहीं है।

आर्मी पब्लिक स्कूल से पक्ष में बोलने वाले वक्ता आए और उन्होंने यह कहा कि चिकित्सकों को पैसों के साथ-साथ इज्ज़त भी मिलती है। वे लोगों की मदद भी करते हैं और इलाज के बदले में पैसे भी कमाते हैं और इस वजह से चिकित्सा क्षेत्र धन कमाने का सर्वोत्तम रास्ता है।
इसके विपक्ष में वक्ता ने तर्क दिए कि आज-कल लोग उच्च स्तर की सेवा को पैसे कमाने का एक नया तरीका समझते हैं | पर ऐसे भी बहुत चिकित्सक हैं जिनको काम के मुताबिक पैसा नहीं मिलता है पर वे फिर भी सेवा करते रहते हैं।

एमिटी इंटरनेशनल स्कूल बनाम डी.पी.स आर.के पुरम

'हिंदी देश के विकास में रूकावट है। '

पहली वक्ता एमिटी इंटरनेशनल स्कूल से थीं जो इस विषय के पक्ष में बोलने आईं। पहली वक्ता ने दर्शकों से सवाल किया कि क्या वे हिंदी को कोई दूसरे भाषा के ऊपर चुनेंगे? उन्होंने कहा कि यहाँ उपस्थित लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी भाषा हमारे देश की सबसे महत्वपूर्ण भाषा नहीं है तथा हिंदी का प्रयोग सिर्फ भाषणों में होता है और कहीं नहीं। अगर हिंदी को लोगों पर थोपा जायेगा तो इससे देश की जनता का विकास कैसे होगा? विपक्ष में बोलने वाले वक्ता ने तर्क दिए कि हिंदी भारत की एक महत्वपूर्ण भाषा है। वक्ता ने गाँधी जी का उदाहरण देते हुए कहा कि गांधीजी ने हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर बढ़ावा दिया इसलिए वर्तमान समय में भी हिंदी भाषा महत्वपूर्ण है।

डी.पी.एस. से जो वक्ता पक्ष में बोलने के लिए आए, उन्होंने यह तर्क दिए कि हमारे देश में सभी हिंदी नहीं बोल सकते। कुल मिलाकर ऐसे चौदह या पंद्रह राज्य है जहाँ हिंदी बोली जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि केवल हिंदी हमारी सांस्कृतिक पहचान नहीं है और अगर लोगों को विकास की पथ पर आगे बढ़ना है तो हम उन पर एक भाषा नहीं थोप सकते। हिंदी हमारे देश को आगे बढ़ने में मदद नहीं कर रही है।

जानिए आप किस तरह के वक्ता हैं?

जब आप एक समूह में काम कर रहे होते हैं तो क्या आप :
क) जल्दी से समूह के अधिनायक बन जाते हैं ?
ख) जल्दी से खबर खोजने लग जाते हैं ?
ग) दूसरों के विचारों का विरोध करते हैं क्योंकि केवल आपके विचार सही हैं ?
घ) कोशिश करते हैं कि आप सबकी बाते सुन लें ?

विवाद करते समय, क्या आप:
क) ज़ोर-ज़ोर से अपने हाथों को हिलाकर बात करते हैं ?
ख) अधिकतर वस्तु स्थिति के बारे में बताते हैं ?
ग) ज्यादातर विरोधियों की बातों का विरोध करते रहते हैं ?
घ) तथ्यों के द्वारा अपने तर्क को समझाते हैं?

एक विवाद को जीतने का सबसे श्रेष्ठ तरीका क्या है?
क) सबको आश्वासन प्रदान करना ।
ख) अपने तर्क के तथ्यों को सुनिश्चित कर।
ग) विरोधियों के सारे तर्क का विरोध कर।
घ) यह सुनिश्चित कर कि सबको आपकी बात समझ आ रही है।

आपकी बोली कैसी हो?
क) जोरदार और क्रोधित।
ख) आप बिना साँस लिए बोलते चले जाए।
ग) अशिष्ट, असभ्य, दूसरों की बुराई करते हुए।
घ)

आप कौन से चरित्र/पात्र की तरह हो?
क) शेलडन कूपर
ख) आर-२ दी-२
ग) चक बैस
घ) रॉस गेलर

अगर आपने ज्यादातर (क) चुने हैं तो आप एक: शिक्षिका विवादी हैं !!
शिक्षिका विवादी वे विवादी होते हैं जो प्रकृतिस्थ और उत्तेजनाहीन स्वाभाव के होते हैं। यह विवादी अपने दर्शकों को ऐसे समझते है कि एक छोटे से बच्चे को समझा रहे हो। वह स्पष्टता से बात करते हैं और उनकी बोली भी साफ़ होती है।

अगर आपने ज्यादातर (ख) चुने हे तो आप एक रोबोट विवादी हैं!
रोबोट विवादी वे विवादी होते हैं जो बिल्कुल वास्तविक होते हैं। 'रोबोट' क्योंकि वे अपने भाव पर ज्यादा ध्यान नही देते।

अगर आपने ज्यादातर (ग) चुने हैं तो आप एक सहसा विवादी हैं !
सहसा विवादी वह विवादी होते हैं जो वाद विवाद काम और विरोधियों के विचारो की बुराई ज़्यादा करते है। काफी बार वह अशिष्ट भी हो सकते हैं।

अगर आपने ज्यादातर (घ) चुने हैं तो आप एक स्वीकारात्मक विवादी हैं!
स्वीकारात्मक विवादी वह विवादी होता है जो बहुत ही अच्छे नेता होते हैं। वह उच्च स्वर में बोलते हैं व हाथों के हाव भाव का भी उचित प्रयोग करते हैं।

दूसरा चरण

आज तक वाद-विवाद प्रतियोगिता के दूसरे दिन की शुरुआत 'टर्नकोट' से हुई। सभी प्रतियोगी थोड़े तनावग्रस्त थे किन्तु दूसरे चरण में भाग लेने के लिए उत्साहित भी दिखे। सभी वक्ताओं को विषय के पक्ष व विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत करने थे। 'टर्नकोट' में विभिन्न विषयों पर छात्रों की राय को सुनने का मौका मिला। छात्रों ने कहा कि उद्देश्य के बिना इंसान कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता, इसलिए 'फल की चिंता करना जरूरी है'। 'अतिथि देवता के समान होता है' के विषय पर वक्ता ने कहा कि मेहमानों के साथ आदर व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए। 'अमीर होकर आदमी अपनी इंसानियत खो बैठता है' विषय पर वक्ता ने कहा कि ऐश्वर्य गुरुर को जन्म देता है। हमे यह भी सुनने को मिला कि अक्सर हमें जब कुछ मिलता है तो छप्पड़ फाड़ कर मिलता है। इस चरण के अंत में दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुञ्ज और हेरिटेज स्कूल विजयी रहें।

सम्पादकीय

रीआना सोनी, सना शर्मा, सिया गर्ग, वेदिका बगला, अनूष्का क्लेस, दारिणी चंदोक, तन्वी बहल, सनाह कपूर, आर्यन साध, साहिल कुमार, राबिया गुप्ता, अदिति सिंह, आरुषि भूतानि, इशिता मल्होत्रा, आदित्य कपूर, असीस कौर, जय जग्गनाथ, अनन्य जैन

संपादक - ज़ोया हसन